ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 4, July 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

महिला स्वयं सहायता समूह बूंदी और बारां जिले के संदर्भ में

[1]DharmRaj Meena, [2]Dr. Banwari Lal Menawat

[1]Govt. Girls College, Bundi, Vidya Sambhal Yojana, Rajasthan, India

[2]Professor and Supervisor, Political Science, Govt. College, Gangapur City, Rajasthan, India

सार

एक स्वयं सहायता समूह (आमतौर पर संक्षिप्त रूप में एसएचजी) एक वित्तीय मध्यस्थ समिति है जो आमतौर पर 18 से 50 वर्ष की आयु के बीच की 12 से 25 स्थानीय महिलाओं से बनी होती है। अधिकांश स्वयं सहायता समूह भारत में हैं, हालांकि वे अन्य देशों में पाए जा सकते हैं, खासकर दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया में. एसएचजी आम तौर पर दैनिक मजदूरी पर काम करने वाले लोगों का एक समूह होता है जो एक ढीला समूह या संघ बनाते हैं। जो लोग दान करने में सक्षम हैं उनसे धन एकत्र किया जाता है और जरूरतमंद सदस्यों को दिया जाता है।

सदस्य कुछ महीनों तक छोटे नियमित बचत योगदान भी कर सकते हैं जब तक कि समूह में ऋण देना शुरू करने के लिए पर्याप्त धन न हो जाए। फिर किसी भी उद्देश्य के लिए धनराशि सदस्यों या गाँव के अन्य लोगों को वापस उधार दी जा सकती है। बूंदी और बारां जिले के संदर्भ मेंकई स्वयं सहायता समूह सूक्ष्म-ऋण की डिलीवरी के लिए बैंकों से जुड़े हुए हैं।

परिचय

एसएचजी 10-25 सदस्यों वाला एक समुदाय-आधारित समूह है। सदस्य आमतौर पर समान सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि वाली महिलाएं होती हैं, जो नियमित आधार पर छोटी-छोटी रकम बचाने के लिए स्वेच्छा से एक साथ आती हैं। वे वित्तीय रूप से स्थिर होने के लिए अपने संसाधनों को एकत्रित करते हैं, आपातकालीन या वित्तीय कमी के समय, महत्वपूर्ण जीवन की घटनाओं या संपत्ति खरीदने के लिए अपनी सामूहिक बचत से ऋण लेते हैं। [1] [2] समूह के सदस्य क्रेडिट के उचित अंतिम उपयोग और समय पर पुनर्भुगतान सुनिश्चित करने के लिए सामूहिक ज्ञान और सहकर्मी दबाव का उपयोग करते हैं। [1]भारत में, आरबीआई के नियमों के अनुसार बैंक संपार्श्विक सहित वित्तीय सेवाएं प्रदान करते हैंइन समूहों को बहुत कम ब्याज दरों पर निःशुल्क ऋण। इससे गरीब महिलाओं को संस्थागत वित्तीय सेवाओं से बहिष्करण की चुनौतियों से बचने में मदद मिलती है। यह प्रणाली एकजुटता ऋण देने से निकटता से संबंधित है , जिसका व्यापक रूप से माइक्रोफाइनेंस संस्थानों द्वारा उपयोग किया जाता है । [3]

बूंदी और बारां जिले के संदर्भ में बचत और ऋण समूहों के रूप में अपने कार्य से परे, एसएचजी गरीब महिलाओं को एकजुटता बनाने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं। वे महिलाओं को एक साथ आने और स्वास्थ्य, पोषण, शासन और लैंगिक न्याय सहित उनके स्वयं के जीवन से संबंधित मुद्दों पर कार्य करने की अनुमति देते हैं। [4] [2] स्वयं सहायता समूह गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) द्वारा शुरू किए जाते हैं जिनका आम तौर पर व्यापक गरीबी-विरोधी एजेंडा होता है। स्वयं सहायता समूहों को महिलाओं को सशक्त बनाने, गरीबों और जरूरतमंदों के बीच नेतृत्व क्षमता विकसित करने, स्कूल नामांकन बढ़ाने और पोषण में सुधार और जन्म नियंत्रण के उपयोग सहित लक्ष्यों के साधन के रूप में देखा जाता है। वित्तीय मध्यस्थता को आम तौर पर प्राथमिक उद्देश्य के बजाय इन अन्य लक्ष्यों के प्रवेश बिंदु के रूप में अधिक देखा जाता है। [5] यह ग्राम पूंजी के स्रोतों के रूप में उनके विकास में बाधा उत्पन्न कर सकता है, साथ ही महासंघ के माध्यम से पूंजी के स्थानीय रूप से नियंत्रित पूल को एकत्रित करने के उनके प्रयासों में बाधा उत्पन्न कर सकता है, जैसा कि ऐतिहासिक रूप से क्रेडिट यूनियनों द्वारा पूरा किया गया था । स्वयं सहायता समूह यानी Self help Group में ऐसी महिलाएं शामिल होती हैं जो समान आय वर्ग से सम्बंधित होती हैं महिलाएं समूह के हर एक सदस्य की आर्थिक सहायता करती हैं। आमतौर पर इस समूह में 18 से 40 वर्ष के मध्य की महिलाएं शामिल होती हैं। समूह का कार्य समूह के सदस्यों की आर्थिक सहायता करना है।[5,7]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

विचार-विमर्श

बूंदी और बारां जिले के संदर्भ में कई स्वयं सहायता समूह, नाबार्ड के 'एसएचजी बैंक लिंकेज' कार्यक्रम के तहत, अपनी स्वयं की पूंजी का आधार जमा होने के बाद बैंकों से उधार लेते हैं। इस मॉडल ने गरीब आबादी तक सूक्ष्म-वित्त सेवाएं पहुंचाने के एक संभावित तरीके के रूप में ध्यान आकर्षित किया है, जिन तक बैंकों या अन्य संस्थानों के माध्यम से सीधे पहुंचना मुश्किल है। "अपनी व्यक्तिगत बचत को एक जमा में एकत्रित करके, स्वयं सहायता समूह बैंक की लेनदेन लागत को कम करते हैं और जमा की एक आकर्षक मात्रा उत्पन्न करते हैं। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से, बैंक छोटे ग्रामीण जमाकर्ताओं को बाजार दर पर ब्याज का भुगतान करते हुए सेवा प्रदान कर सकता है। " [6]

2006 की एक रिपोर्ट के अनुसार, नाबार्ड का अनुमान है कि भारत में 2.2 मिलियन एसएचजी हैं, जो 33 मिलियन सदस्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्होंने आज तक इसके लिंकेज कार्यक्रम के तहत बैंकों से ऋण लिया है। इसमें वे स्वयं सहायता समूह शामिल नहीं हैं जिन्होंने उधार नहीं लिया है। [7] 2004 में एस चक्रवर्ती द्वारा किए गए एक अध्ययन में कहा गया है कि एसएचजी जैसे संगठन "गरीबी उन्मूलन" के लिए एक प्रभावी उपकरण हो सकते हैं। "एसएचजी बैंकिंग लिंकेज कार्यक्रम अपनी शुरुआत से ही बूंदी और बारां जिले में प्रमुख रहा है, जो विशेष रूप से स्थानिक प्राथमिकताएं दर्शाता है। क्षेत्र - बूंदी और बारां जिले । वित्तीय वर्ष 2005-2006 के दौरान जुड़े एसएचजी क्रेडिट में इन की हिस्सेदारी 57% थी।" [8]

बूंदी और बारां जिले के संदर्भ में सेल्फ हेल्प ग्रूप छोटे लेवल पर काम कर रही महिलाओं का एक समूह है। ये अपने संसाधनों और सेविंग्स फंड का इस्तेमाल करके अपना कारोबार बढ़ाता हैं। किसी सूक्ष्म कारोबार से जुड़े इस ग्रूप में 10-25 महिलाएं शामिल हो सकती हैं। एसएचजी यानी सेल्फ हेल्प ग्रूप बनाने के लिए समूह को रजिस्टर करना होता है। साथ ही बैंक खाता खुलवाना होता है। वहीं तय सीमा में बेहतर प्रदर्शन पर बैंक की तरफ से उसे आसान कर्ज मिलने लगता है। साथ ही कई सरकारी योजनाओं का लाभ भी मिलता है। [8]

SHGs महिलाओं को सशक्त बनाते हैं और उनमें नेतृत्व कौशल विकसित करते हैं। अधिकार प्राप्त महिलाएंँ ग्राम सभा व अन्य चुनावों में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेती हैं।

बूंदी और बारां जिले के संदर्भ में इस बात के प्रमाण हैं कि स्वयं सहायता समूहों के गठन से समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार के साथ परिवार में उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार होता है और उनके आत्म-सम्मान में भी वृद्धि होती है।

परिणाम

- एक आर्थिक रूप से गरीब व्यक्ति एक समूह के हिस्से के रूप में ताकत हासिल करता है।
- इसके अलावा, एसएचजी के माध्यम से वित्तपोषण में ऋणदाताओं और उधारकर्ताओं दोनों के लिए लेनदेन लागत आती है।
- जबकि ऋणदाताओं को बड़ी संख्या में छोटे आकार के व्यक्तिगत खातों के बजाय केवल ट्रिपल एसएचजी खाते को संभालना पड़ता है, एसएचजी के हिस्से के रूप में उधारकर्ताओं को कागजी काम पूरा करने और नुकसान पर (शाखा और अन्य स्थानों से) यात्रा कम से कम करनी पड़ती है। ऋण के लिए प्रचार में कार्यदिवस।
- जहाँ सफलता मिली, वहाँ स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब लोगों, विशेषकर महिलाओं को महत्वपूर्ण रूप से सशक्त बनाया है। [9]
- एसएचजी ने ग्रामीण क्षेत्रों में अनौपचारिक ऋणदाताओं के प्रभाव को कम करने में काफी मदद की है।
- कई बड़े कॉर्पोरेट घराने भी भारत में कई स्थानों पर SHG को बढ़ावा दे रहे हैं।
- एसएचजी उधारकर्ताओं को संपार्श्विक की कमी की समस्या से उबरने में मदद करते हैं। महिलाएं अपनी समस्या पर चर्चा कर उसका समाधान ढूंढ सकती हैं। [2]

स्वयं सहायता समूह (SHG) आंदोलन ग्रामीण क्षेत्रों में महिला लचीलापन और उद्यमिता के सबसे शक्तिशाली इन्क्यूबेटरों में से एक है। यह बूंदी और बारां जिले में लैंगिक सामाजिक निर्माण को बदलने के लिये एक शक्तिशाली चैनल है।

बूंदी और बारां जिले में महिलाएं अब आय के स्वतंत्र स्रोत बनाने में सक्षम हैं, जबकि कई युवा अर्द्ध-साक्षर महिलाएं थीं जिनके पास घरेलू कौशल है, पूंजी और प्रतिगामी सामाजिक मानदंडों की अनुपस्थिति उन्हें किसी भी निर्णय लेने की भूमिका में पूरी तरह से शामिल होने तथा अपना स्वतंत्र व्यवसाय स्थापित करने से रोकती है। महिलाएं कई क्षेत्रों में बूंदी और बारां जिले के बिज़नेस कॉरेस्पोंडेंट (BC), बैंक सखियों, किसान सखियों और पाशु सखियों के रूप में काम कर रही हैं।

निष्कर्ष

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से महिलाओं को एक बड़ी सौगात दी गई है। दरअसल प्रधानमंत्री द्वारा सेल्फ हेल्प ग्रुप को 1000 करोड़ रुपये दिए गए हैं। अब अपना कारोबार शुरू करने की सोच रही महिलाओं को दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसके साथ ही प्रधानपंत्री ने बिजनेस कॉरस्पॉन्डेंट सखी को भी पहले महीने का मानदेय ट्रांसफर किया है। वहीं मुख्यमंत्री कन्या सुमंगल योजना के लाभार्थियों को भी उनकी रकम भेजी गई। प्रयागराज दौरे के दौरान प्रधानमंत्री ने महिलाओं के लिए कई बड़े ऐलान किए है। ऐसे में महिलाओं को अब अपने कारोबार को बढ़ावा देने में सहायता मिलेगी। यह रकम दीनदयाल अंत्योदय योजना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत ट्रांसफर की गई है। जिसमें 1.1 लाख रुपये प्रति स्वसहायता समूह के हिसाब से 80 हजार समूहों को समुदाय निवेश निधि व 15 हजार रुपये प्रति स्वसहायता समूह के हिसाब से 60 हजार समूहों को राशि मिल रही है। दरअसल, सेल्फ हेल्प ग्रुप में लगभग 16 लाख महिला सदस्य हैं, जिन्हें जबरदस्त फायदा मिलेगा। अगर आप भी अपना कारोबार शुरू करने की सोच रही हैं। तो आपको मालूम होना चाहिए कि इसका लाभ आपको कैसे मिल सकता है।[9]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. कबीर, नैला (2005)। "क्या माइक्रोफाइनेंस महिला सशक्तिकरण के लिए एक 'जादुई गोली' है? दक्षिण एशिया से निष्कर्षों का विश्लेषण"। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक । 40 (44/45): 4709-4718। आईएसएसएन 0012-9976 . जेएसटीओआर 4417357 ।
2. ^ "पैसा और क्रेडिट"(पीडीएफ)। आर्थिक विकास को समझना: दसवीं कक्षा के लिए सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक । नई दिल्ली:एनसीईआरटी। 2019. पीपी. 50-51. आईएसबीएन 978-81-7450-655-9. ओसीएलसी 1144708028 ।
3. ^ (भारतीय रिज़र्व बैंक) संग्रहीत 2008-05-12 को वेबैक मशीन पर
4. ^ गुगर्टी, मैरी के; बिस्केय, पियरे; एंडरसन, सी. लेह (2019)। "विकास प्रदान करना? दक्षिण एशिया और अफ्रीका में विकास मध्यस्थों के रूप में स्वयं सहायता समूहों पर साक्ष्य" । विकास नीति समीक्षा । 37 (1): 129-151. डीओआई : 10.1111/डीपीआर.12381 । आईएसएसएन 1467-7679 . पीएमसी 7269175 । पीएमआईडी 32494112 .
5. ^ स्टुअर्ट रदरफोर्ड. 'माइक्रोफाइनेंस प्रदाताओं के रूप में स्वयं सहायता समूह: वे कितना अच्छा काम कर सकते हैं?' माइमियो, 1999, पृ. 9
6. ^ रॉबर्ट पेक क्रिस्टन, एन.श्रीनिवासन और रॉजर वूरहिस, "बाजार में गिरावट का प्रबंधन: विनियमित वित्तीय संस्थान और माइक्रोसेविंग में कदम।" मेडलिन हिर्शलैंड (सं.) में गरीबों के लिए बचत सेवाएँ: एक ऑपरेशनल गाइड , कुमारियन प्रेस, ब्लूमफील्ड, सीटी, 2005, पी। 106.
7. ^ भारत में ईडीए और एपीएमएएस स्व-सहायता समूह: रोशनी और रंगों का एक अध्ययन , केयर, सीआरएस, यूएसएआईडी और जीटीजेड, 2006, पी। 11
8. ^ फौइलेट सी. और ऑग्सबर्ग बी. 2007. "भारत में स्व-सहायता समूह बैंकिंग लिंकेज कार्यक्रम का प्रसार", ग्रामीण वित्त अनुसंधान पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन: बढ़ते परिणाम, एफएओ और आईएफएडी, रोम द्वारा आयोजित, मार्च 19-21।
9. ^ अग्रवाल, शालिनी; शम्सी, मोहम्मद सलमान (1 जून 2022)। "स्वयं सहायता समूह आंदोलन: सतत विकास के लिए अग्रणी ग्रामीण महिला सशक्तिकरण के अथक मार्गदर्शक और समर्थक"। प्रौद्योगिकी प्रबंधन और सतत विकास के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल । 21 (2): 229. डीओआई : 10.1386/टीएमएसडी_00058_1 ।

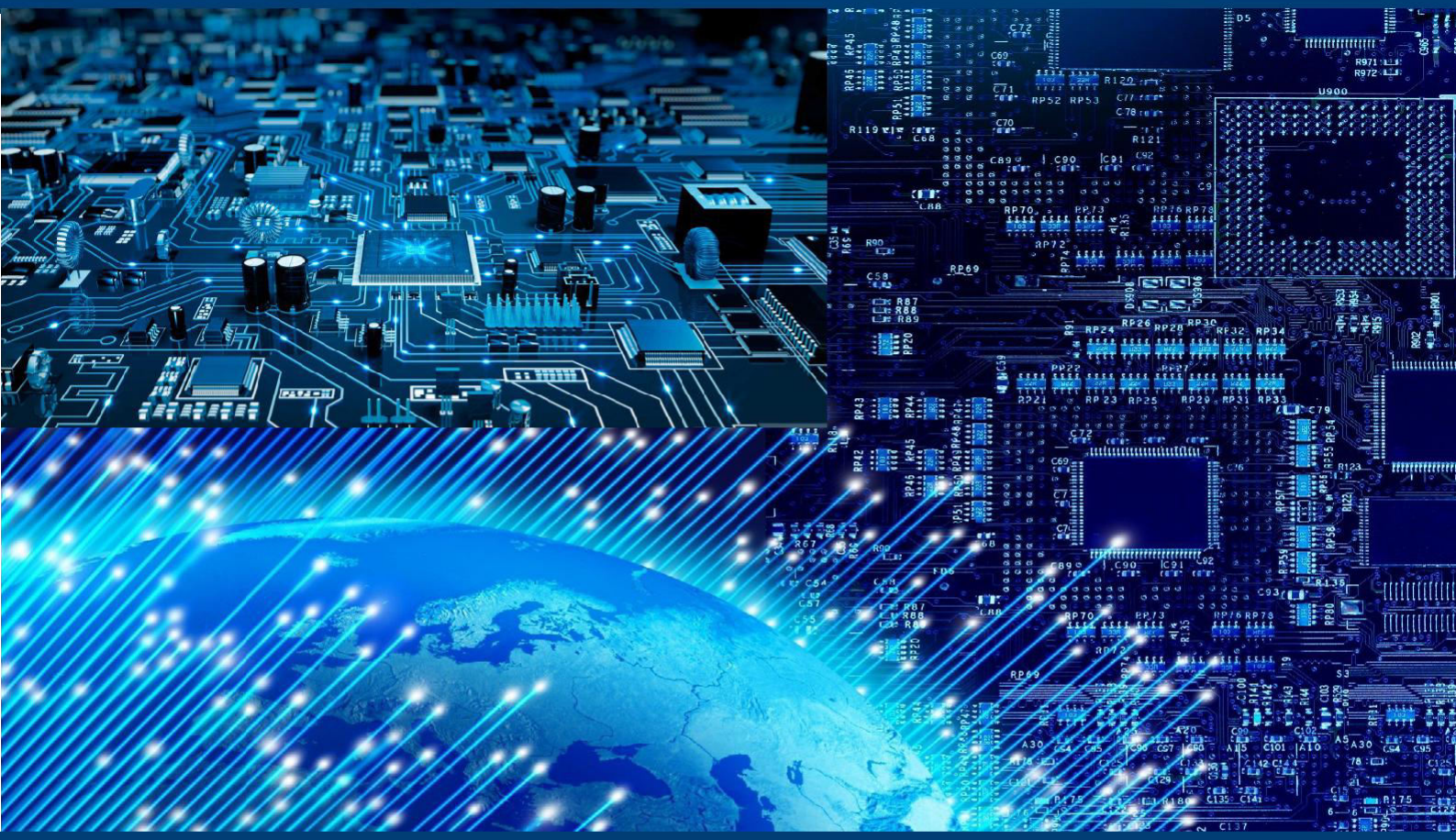

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |